होली – आध्यात्मिक रंगों का त्यौहार

रंगों का त्यौहार होली अपने आप में कई आध्यात्मिक रहस्यों के रंगों को भी समेटे हुए है। अंग्रेजी में होली का अर्थ होता है–पवित्रता अर्थात् होली का पर्व हमें पवित्र बनने को संदेश देता है। पवित्रता का प्रतीक है सफेद रंग। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो सफेद रंग के प्रकाश में सारे रंग समाए हुए होते हैं। जैसे हीरा सफेद होता है; लेकिन उसमें भी सारे रंग समाये हुए रहते हैं। इसी प्रकार पवित्रता सर्व गुणों की जननी है। यदि हम पवित्रता को धारण कर लें तो बाकी सारे गुण हम में स्वतः ही आ जाएँगे। हिंदी में होली का अर्थ यह भी है– हो+ली अर्थात् बीत चुकी। जो भी बुरी बातें हमारे जीवन में आती हैं, उन्हें भूलते जाना है। सदा यह सोचना है कि जो हुआ, जो हो रहा है वह कल्याणकारी है और जो होने वाला है, वह भी कल्याणकारी ही होगा।

होली का आध्यात्मिक रूप से अर्थ है कि परमपिता शिव परमात्मा के संग के रंग में उनके समान बनना। ऐसा रंग जो समान बना देता है। ऐसे भिन्न–भिन्न रंग जो अविनाशी होते हैं जैसे– ज्ञान का रंग, याद का रंग, अनेक शक्तियों का रंग, गुणों का रंग, श्रेष्ठ दृष्टि का रंग, श्रेष्ठ वृत्ति का रंग, श्रेष्ठ भावना और कामना का रंग। जैसे गुण वैसे ही रूप बना देता है। परमात्मा के साथ होली मनाने से फरिश्ता से देवता बन जाते हैं। जलाना, मनाना और मंगलमय मिलन मनाना उसका यादगार बना होली। जलाना माना पुराने संस्कार, पुरानी स्मृतियाँ योगअग्नि से अर्थात् परमपिता शिव परमात्मा की याद से विकारों की लकड़ियों को जलाना। बाद में परमात्मा के संग का पक्का रंग लगेगा और हर आत्मा परमात्मा का परिवार दिखाई देगी। ऐसे रंग मे रंगी हुई आत्माओं में विशेष गुण और अलौकिकता नज़र आती है। ऐसी रूहानी रंग में रंगी हुई आत्मायें होली हंस बन जाती हैं और हीरे जैसा अमूल्य जीवन प्राप्त करती हैं। सदा ही अतीन्द्रिय सुख में वा अविनाशी खुशी में झूमते और झूलते रहते हैं।

होली से भगवान के अवतरण की भी याद आती है। पौराणिक कथाओं में उल्लेख है कि हिरण्यकश्यप राक्षस ने स्वयं को भगवान घोषित करके जो पाप किए, उसका दण्ड देने के लिए भगवान ने नरसिंह का अवतार धारण किया तथा उस राक्षस की इच्छानुसार न मानव, न पशु, न घर के अंदर, न बाहर, न दिन में, न रात में उसका वध किया। वास्तव में इसका भी आध्यात्मिक रहस्य है। 5000 वर्ष के चतुर्युगी मनुष्य सृष्टि–चक्र के अंत में जब सभी मनुष्यात्माएँ पतित बन जाती हैं तब स्वयं भगवान कलियुगी घोर रात्रि और सतयुगी स्वर्णिम सवेरे के संगम पर अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग पर एक साधारण मनुष्य तन में प्रवेश कर पाँच विकारों रूपी राक्षसों को तथा स्वयं को भगवान कहकर ईश्वर से दूर करने वाले धर्म के ठेकेदारों से प्रहलाद रूपी अपने बच्चों को मुक्त करते हैं।

नरसिंह अवतार में सिंह वास्तव में विकारों के प्रति रूद्र रूप धारण करने का प्रतीक है और शास्त्रों में ही दिखाया गया है कि महादेव शंकर ने कामदेव अर्थात् काम विकार को भस्म किया अर्थात् निराकार परमात्मा शिव जिस साधारण मनुष्य शरीर में प्रवेश कर विकारों और पुरानी सृष्टि का विनाश करते हैं, उसका कर्तव्यवाचक नाम रखते हैं शंकर। शंकर के द्वारा निराकार शिव हम प्रहलाद रूपी मनुष्यात्माओं को अपनी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण की कला अर्थात् राजयोग सिखाते हैं जिससे हम विकारों से सुरक्षित रहकर ईश्वर की साधना कर सकें और वर्तमान संगमयुग पर नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बन सकें।

वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग पर सर्व गुणों के सागर पतित–पावन शिव अपने गुणों और ज्ञान का रंग हम आत्माओं पर लगाकर अपने समान सर्वगुण संपन्न बनाते हैं तथा विकारों को भस्म करना सिखाते हैं। इसी की यादगार में हम होली पर एक–दूसरे को रंग लगाते हैं और होलिका जलाते हैं। तो आइये होली के रहस्य को समझकर सच्ची होली मनायें।

आध्यात्मिक विश्वविद्यालय मो.9891370007 website-www.pbks.info Youtube-AIVV